E Content for the student of Patliputra University

Subject - Political Science

Class- B.A. (Hons.) ~~Class~~ Part- III Paper VII

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Professor - Pol. Sc.
R.R.S. College, Mokama

Topic - Impact of Religion on Indian Politics.

राजनीति और धर्म प्राचीन काल से ही एक दूसरे को प्रभावित करते रहे हैं। यूरोप में कई धर्म युद्ध इसके उदाहरण हैं। भारत में बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार में सम्राट अशोक की भूमिका जगजाहिर है। भारत में जब हम धर्म के प्रभाव की बात करते हैं तो हमें कई बिंदुओं पर ध्यान देना होता है।

भारत लम्बे समय से विदेशी आक्रांताओं का सामना करता रहा है। ये विदेशी शासक और आक्रांता भारतीय सभ्यता संस्कृति तथा धार्मिक धरोहरों को नष्ट करने में अग्रसर रहे। इसका भावनात्मक प्रभाव भारत के बहुसंख्यक हिन्दू समाज पर पड़ा। मुगलों और अंग्रेजों के शासन काल में भारत की अपनी पुरानी सभ्यता एवं संस्कृति तहस नहस कर दी गई।

इसके बावजूद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिंदू और मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। 1857 की क्रांति में भी हिंदुओं ने बहादुर शाह जफर को अपना नेता माना। इसी प्रकार भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हर पग पर हिंदू मुस्लिम साथ साथ रहे। चाहे कांग्रेस के नेतृत्व का आंदोलन हो या भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद का सभी आंदोलनों में मुसलमान भारी संख्या में स्वतंत्रता की लड़ाई के दीवाने थे। यहाँ तक की सुभाष चन्द्र बोस के आजाद हिंद फौज में भी मुसलमानों की उपस्थिति अच्छी खासी थी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ही राज्य और धर्म के बीच संबंधों के निर्धारण हेतु पंथनिरपेक्षता का सिद्धांत लोकप्रिय हुआ। इसका अर्थ था कि राज्य का कोई धर्म या पंथ नहीं होगा। सभी धर्मों एवं पंथों के प्रति राज्य समान दृष्टिकोण रखेगा। पंथ एवं धर्म राज्य के नहीं बल्कि व्यक्ति के आस्था के विषय होंगे। वे अपनी पूजा पद्धति, धार्मिक व्यवहार के लिए स्वतंत्र होंगे।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा तथा भारत ने स्वतंत्र भारत के लिए पंथनिरपेक्षता की नीति को स्वीकृति प्रदान कर दी। स्वतंत्र भारत के संविधान सभा ने भी इसकी स्वीकृति दी। यद्यपि संविधान यह शब्द उल्लेखित नहीं किया गया। इसे 1976 में 42वें संविधान संशोधन द्वारा प्रस्तावना में जोड़ा गया। किंतु धर्मनिरपेक्षता भारतीय संविधान की मूल भावना में अन्तर्निहित है।

स्वतंत्रता आंदोलन में ही धर्म को लेकर दो विपरीत धारा में क्रमशः महात्मा गाँधी तथा मोहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में चली।

गाँधी जी धर्म से राजनीति को पृथक रखने के विरोधी थे। उन्होंने स्पष्ट कहा कि बिना धर्म की राजनीति का कोई औचित्य नहीं है। वे धर्म को व्यापक अर्थ में देखते थे, जिसमें नैतिकता, सदाचार, आध्यात्म तथा अच्छाइयों का मिश्रण था। उनके अनुसार धर्म ही राजनीति को विवेक युक्त करता है। वे पंथनिरपेक्षता से भी ऊपर सर्वधर्म समभाव के पैरोकार थे। उनकी दृष्टि में धर्म का उपयोग स्वार्थ के लिए, हिंसा के लिए, अलगाव के लिए, द्वेष के लिए नहीं किया जाना चाहिए। सभी धर्म नैतिकता, मूल्य, प्रेम, अहिंसा की शिक्षा देता है। कुछ लोग धर्म के नाम पर दंगा, कट्टरता, द्वेष, हिंसा का रास्ता अपनाते हैं। जो एकदम गलत है।

इसके विपरीत जिन्ना का विचार धर्म के प्रति गाँधी जी के विपरीत था। वे धर्म को एक अलग

कौम अथवा राष्ट्र मानते थे। इस आधार पर वे हिन्दू और मुस्लिम के लिए अलग राष्ट्र और राज्य की मांग करने लगे। इसके लिए उन्होंने हर गलत रास्ते यहाँ तक कि व्यापक हिंसा का सहारा लिया। फलत: उन्होंने भारत को विभाजित कर मुसलमानों के लिए पाकिस्तान राज्य के निर्माण में सफलता प्राप्त कर ही ली।

स्वतंत्र भारत की राजनीति में भी धर्म का प्रभाव कम नहीं बल्कि व्यापक होता गया। तथाकथित पंथ निरपेक्षतावादियों पर मुस्लिम तुष्टिकरण का आरोप लगा। मुसलमान तथा अन्य अल्पसंख्यक वोट बैंक के रूप में प्रयुक्त होते हैं, ऐसा आरोप लगा। कांग्रेस इस नीति पर चलने में अग्रणी थी, बाद में कई क्षेत्रीय दलों ने भी ऐसी ही नीति का प्रयोग करना शुरू किया।

इसके विपरीत भाजपा के नेतृत्व में बहुसंख्यक हिन्दू अस्मिता की पहचान पर जोर दिया। बाबरी मस्जिद आंदोलन तथा राम मंदिर निर्माण आंदोलन के द्वारा भाजपा को बहुत सफलता भी दी। भाजपा कई बार सत्ता में भी आ चुकी है। अधिकांश राज्यों में उसकी सरकारें हैं।

कांग्रेस ने जहाँ हिन्दू कोड बिल के द्वारा हिन्दू कानून में संशोधन करवाया वहीं भाजपा ने मुस्लिम तलाक प्रथा को बंद करने का कानून बनवाया। कश्मीर से संबंधित संविधान के अनु० धारा में संशोधन लाया तथा जम्मू कश्मीर एवं लद्दाख को अलग-अलग केन्द्रशासित प्रदेश बना दिया। इन सरकारों का प्रभाव यह पड़ा कि हिन्दू बहुमत का वोट बैंक भाजपा के साथ बढ़ने लगा।

इस प्रकार पंथ निरपेक्षता समर्थक दलों के वोट बैंक का आधार खिसकने लगा। भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्व में समान आचार संहिता की बात की गई है। संविधान लागू होने के 70 इतने वर्षों के बाद भी इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाया गया। इसके लिए कोई कदम नहीं उठाया जाना ही मुस्लिम तुष्टिकरण का आधार माना जाता है।

__/__/__

इन समस्त अध्ययनों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि वर्तमान समय में भारतीय राजनीति पर धर्म का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। पंथनिरपेक्षता का सिद्धांत या सर्व धर्म समभाव का दृष्टिकोण धूमिल पड़ रहा है। धार्मिक उन्माद फैलाने वाले नेताओं की संख्या भी बढ़ रही है तथा वे जन प्रतिनिधि के रूप में विधायिका एवं संसद के सदस्य भी हो रहे हैं। यह विषय की समस्या की ओर संकेत देता है। उग्र प्रदर्शनों और हिंसक आंदोलनों के शिकार निर्दोष लोग हो रहे हैं। मूलभूत समस्या पर से ध्यान हटाया जा रहा है। केवल धार्मिक उन्माद पैदा कर वोट बैंक संगठित करने का प्रयास किया जा रहा है।

इस नकारात्मक प्रवृत्ति पर समय रहते रोक लगाने की आवश्यकता है, अन्यथा बड़ी राष्ट्रीय क्षति से इंकार नहीं किया जा सकता है। उन्मादी राजनीति बहुत दिनों तक टिकाऊ नहीं होती है।